॥ॐ॥
॥श्री परमात्मने नमः ॥
॥श्री गणेशाय नमः॥

॥ श्रीरामरहस्योपनिषत्॥

विषय सूची

॥अथ श्रीरामरहस्योपनिषत् ॥ 3

॥प्रथमेध्याये: प्रथम अध्याय॥ 5

॥द्वितीयोऽध्यायः द्वितीय अध्याय॥ 12

॥तृतीयो अध्याय : तीसरा अध्याय॥ 39

॥ चतुर्थो ध्याय: चौथा अध्याय ॥ 46

॥ पंचमोऽध्यायः पाँचवाँ अध्याय ॥ 50

श्री राम, सीताजी, लक्ष्मण जी और भरत जी मंत्र 58

॥ श्री हरि ॥

॥अथ श्रीरामरहस्योपनिषत् ॥

कैवल्यश्रीस्वरूपेण राजमानं महोऽव्ययम् ।
प्रतियोगिविनिर्मुक्तं श्रीरामपदमाश्रये ॥

जो एकमात्र मोक्ष कैवल्य पद है, जो हर श्री से सम्पन्न है, जो राजा के समान महान और आकाश के समान विशाल है, जिसका कोई प्रतिद्वंद्वी नहीं है, मैं ऐसे श्री राम के पदों का आश्रय लेता हूँ

॥ हरिः ॐ ॥

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः ॥

गुरु के यहाँ अध्ययन करने वाले शिष्य अपने गुरु, सहपाठी तथा मानव मात्र का कल्याण-चिन्तन करते हुए देवताओं से प्रार्थना करते है कि:

हे देवगण ! हम भगवान का आराधन करते हुए कानों से कल्याण मय वचन सुनें। नेत्रों से कल्याण ही देखें। सुदृढः अंगों एवं शरीर से

भगवान की स्तुति करते हुए हमलोग; जो आयु आराध्य देव परमात्मा के काम आ सके, उसका उपभोग करें।

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥

जिनका सुयश सभी ओर फैला हुआ है, वह इन्द्रदेव हमारे लिए कल्याण की पुष्टि करें, सम्पूर्ण विश्व का ज्ञान रखने वाले पूषा हमारे लिए कल्याण की पुष्टि करें, हमारे जीवन से अरिष्टों को मिटाने के लिए चक्र सदृश्य, शक्तिशाली गरुड़देव हमारे लिए कल्याण की पुष्टि करें तथा बुद्धि के स्वामी बृहस्पति भी हमारे लिए कल्याण की पुष्टि करें।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

हमारे, अधिभौतिक, अधिदैविक तथा तथा आध्यात्मिक तापों (दुखों) की शांति हो।

॥ श्री हरि ॥

॥ श्रीरामरहस्योपनिषत् ॥

॥प्रथमेध्याये: प्रथम अध्याय॥

ॐ रहस्यं रमतपतं वासुदेवं च मुद्गलम् ।
शाण्डिल्यं पैङ्गलं भिक्षुं महच्छारीरकं शिखा ॥ १॥

सनकाद्या योगिवर्या अन्ये च ऋषयस्तथा ।
प्रह्लादाद्या विष्णुभक्ता हनूमन्तमथाब्रुवन् ॥ २॥

ॐ एक बार श्री वासुदेव भगवान विष्णु का जो परम रहस्य राम तापनीयोपनिषद में वर्णित है उसको जानने कि इच्छा से मुद्गल, शांडिल्य, पिंगल इत्यादि महान शरीरधारी ऋषि अपने साथ सनकादि योगेन्द्रों, भगवान विष्णु के प्रहलाद जैसे भक्तों को साथ ले हनुमानजी के पास ज्ञान की भिक्षा लेने गये ॥१-२॥

वायुपुत्र महाबाहो किंतत्त्वं ब्रह्मवादिनाम् ।
पुराणेष्वष्टादशसु स्मृतिष्वष्टादशस्वपि ॥ ३॥

चतुर्वेदेषु शास्त्रेषु विद्यास्वाध्यात्मिकेऽपि च ।

सर्वेषु विद्यादानेषु विघ्नसूर्येशशक्तिषु ।
एतेषु मध्ये किं तत्त्वं कथय त्वं महाबल ॥ ४॥

हे वायुपुत्र! हे महाबाहो! वह कौन सा ब्रह्म तत्त्व है जिसका उपदेश १८ पुराण, १८ स्मृतियाँ, वेद, सम्पूर्ण शास्त्रों एवं समस्त अध्यात्म विद्याओं में उपदेश किया गया है? विष्णु के समस्त नामों में अथवा विघ्नेश (गणेश), सूर्य, शिव-शक्ति- इनमें से वह तत्त्व कौन सा है?' ॥३-४॥

हनूमान्होवाच ॥

भो योगीन्द्राश्चैव ऋषयो विष्णुभक्तास्तथैव च ।
श्रुणुध्वं मामकीं वाचं भवबन्धविनाशिनीम् ॥५॥

हनुमानजी ने उत्तर दिया-'हे योगीजनो, ऋषिगणों तथा विष्णु के भक्तगणों। आप संसार के बन्धनों को नाश करने वाले मेरी बात को ध्यानपूर्वक सुनें। ॥५॥

एतेषु चैव सर्वेषु तत्त्वं च ब्रह्म तारकम् ।
राम एव परं ब्रह्म तत्त्वं श्रीरामो ब्रह्म तारकम् ॥ ६॥

इन सब में (यानि वेद आदि में) परमतत्त्व ब्रह्मस्वरूप 'तारक राम' ही है। राम ही परमब्रह्म है। राम ही परमतप स्वरूप है। राम ही परमतत्त्व हैं राम ही तारकब्रह्म हैं'। ॥६॥

वायुप्त्रेणोक्तास्ते योगीन्द्रा ऋषयो विष्णुभक्ता
हनूमन्तं पप्रच्छुः रामस्याङ्गानि नो ब्रूहीति ।
हनूमान्होवाच । वायुपुत्रं विघ्नेशं वाणीं दुर्गां
क्षेत्रपालकं सूर्यं चन्द्रं नारायणं नारसिंहं
वायुदेवं वाराहं तत्सर्वान्त्समात्रान्त्सीतं लक्ष्मणं
शत्रुघ्नं भरतं विभीषणं सुग्रीवमङ्गदं
जाम्बवन्तं प्रणवमेतानि रामस्याङ्गानि जानीथाः ।
तान्यङ्गानि विना रामो विघ्नकरो भवति ॥७॥

वायुपुत्र (हनुमान्) के यह उपदेश देने पर योगिन्द्रों, ऋषियों और विष्णुभक्तों ने फिर हनुमान्जी से पूछा-- हे हनुमान्! आप हमें श्रीराम के अंगों का उपदेश कीजिए'? हनुमान्जी ने उत्तर दिया-'गणेश, सरस्वती, दुर्गा, क्षेत्रपाल, सूर्य, चन्द्र, नारायण, नरसिंह, वासुदेव, वाराह तथा और भी दूसरे सभी देवताओं के जो मंत्र हैं अथवा उन मंत्रों के जो बीज हैं, वे एवं सीता, लक्ष्मण, हनुमान्, शत्रुघ्न, विभीषण, सुग्रीव, अंगद, जामवन्त और भरत या उनके बीज अक्षर- इन सबको राम का अंग समझना चाहिए। अंगों की पूजा के बिना विधिवत् राम मंत्र का (या उनके यंत्र का) जप विघ्नकारक होता है (यानि कि पूरा फल नहीं देता)। ॥७॥

पुनर्वायुपुत्रेणोक्तास्ते हनूमन्तं पप्रच्छुः ।
आञ्जनेय महाबल विप्राणां गृहस्थानां प्रणवाधिकारः
कथं स्यादिति ॥८॥

इस प्रकार वायुपुत्र हनुमान् के कहने पर योगेन्द्र आदि मुनियों ने उनसे पुन: पूछा-'हे बलवान् अञ्जनी कुमार ! जो गृहस्थ ब्रह्मवादी है उनको प्रणव (ओंकार, ओंकार मंत्र, परमेश्वर) का अधिकार कैसे हो सकता है। ॥८॥

स होवाच श्रीराम एवोवाचेति । येषामेव
षडक्षराधिकारो वर्तते तेषां प्रणवाधिकारः स्यान्नान्येषाम् ।
केवलमकारोकारमकारार्धमात्रासहितं प्रणवमूह्य
यो राममन्त्रं जपति तस्य शुभकरोऽहं स्याम् ॥९॥

श्रीराम बोले-'जिन्हें मेरे इस छह अक्षर के मंत्र (रां रामाय नमः) का अधिकार प्राप्त है उन्हीं को प्रणव का भी अधिकार प्राप्त है, दूसरे को नहीं। जो प्रणव (ॐ) के अकार, उकार, मकार एवं अर्द्धमात्रा सहित जप कर पुनः 'रामचन्द्र' मंत्र जप करता है मैं उसका कल्याण करता हूँ (यानि कि 'ॐ रां रामाय नमः' मंत्र का जप) ॥९॥

तस्यप्रणवस्थाकारस्योकारस्य मकरास्यार्धमात्रायाश्च
ऋषिश्छन्दो देवता तत्तद्वर्णावर्णावस्थानं।
स्वरवेदाग्निगुणानुच्चार्यान्वहं प्रणवमन्त्रद्द्विगुणं
जप्त्वा पश्चाद्राममन्त्रं यो जपेत् स रामो भवतीति
रामेणोक्तास्तस्माद्रामाङ्गं प्रणवः कथित इति ॥१०॥

इसलिए प्रणव के अकार, उकार, मकार एवं अर्द्धमात्रा के ऋषि, छन्द एवं देवता का न्यास करे। इसी प्रकार चतुर्विध स्वर, वेद, अग्नि, गुण आदि का उच्चारण करके उनका न्यास करे। प्रणव मंत्रों का दुगना

जप करे, यानि कि नाम मंत्र के आगे-पीछे प्रणव लगाकर जो जप करता है वह श्रीराम स्वरूप ही हो जाता है।(अत: मंत्र का स्वरूप निम्न बना- ॐ रां रामाय नमः ॐ) ॥१०॥

यहाँ तात्पर्य यह है कि प्रणव मंत्र ओम- ॐ- के तीन अक्षरों में क्रमश: ऋषि, देवता एवं छन्द को जानकर उनका न्यास करे। फिर राम मंत्र के आगे-पीछे ओम शब्द लगाकर जप करने से पूर्ण ब्रह्म का द्योतक होता है।

विभीषण उवाच ॥

सिंहासने समासीनं रामं पौलस्त्यसूदनम् ।
प्रणम्य दण्डवद्भूमौ पौलस्त्यो वाक्यमब्रवीत् । ॥११॥

विभीषण ने प्रार्थना की-एक बार पौलस्त्य नन्दन (विभीषण) सिंहासनासीन रावणान्तक (पौलस्त्यसूदनम्-रावण का अन्त करने वाले) श्रीराम को पृथ्वी पर दण्डवत प्रणाम करके उनसे प्रार्थना की ॥११॥

रघुनाथ महाबाहो केवलं कथितं त्वया ।
अज्ञानां सुलभं चैव कथनीयं च सौलभम् ॥१२॥

हे रघुनाथ, हे महाबाहो। मैंने अपनी रामचर्या' में कैवल्य स्वरूप का वर्णन किया है। वह सबके लिए सुलभ नहीं है। अतः अज्ञजनों की सुलभता के लिए आप अपने सुलभ स्वरूप का उपदेश करें ॥१२॥

श्रीराम उवाच ।
अथ पञ्च दण्डकानि पितृघ्नो
मातृघ्नो ब्रह्मघ्नो गुरुहननः कोटियतिघ्नोऽनेककृतपापो
यो मम षण्णवतिकोटिनामानि जपति स तेभ्यः पापेभ्यः
प्रमुच्यते । स्वयमेव सच्चिदानन्दस्वरूपो भवेन्न किम्॥१३॥

यह सुनकर श्रीराम बोले- 'तुम्हारे ग्रन्थ में जो पाँच दण्डक हैं वे घोर से घोर पापात्माओं को भी पवित्र करने वाले हैं। इनके अतिरिक्त जो मेरे ९६ करोड़ नामों (राम) का जप करता है, वह भी उन सभी पापों से छूट जाता है। इतना ही नहीं, वह स्वयं सच्चिदान्नद स्वरूप हो जाता है। ॥१३॥

पुनरुवाच विभीषणः । तत्राप्य शक्तोऽयं किं करोति ।
स होवाचेमम् । कैकसेय पुरश्चरणविधावशक्तो
यो मम महोपनिषदं मम गीतां मन्नामसहस्रं
मद्विश्वरूपं ममाष्टोत्तरशतं रामशताभिधानं
नारदोक्तस्तवराजं हनूमत्प्रोक्तं मन्त्रराजात्मकस्तवं
सीतास्तवं च रामषडक्षरीत्यादिभिर्मन्त्रैर्यो मां
नित्यं स्तौति तत्सदृशो भवेन्न किं भवेन्न किम् ॥१४॥

विभीषण नेपुनः प्रार्थना की- जो पाँच दण्डक या सोलह करोड़ नाम जप नहीं कर पाये, वो क्या करे?' तब श्रीराम ने बतलाया- 'जो आदि अन्त में ओम (प्रणव- ॐ) लगाकर मेरे मंत्र का पचास लाख जप करे और इसी मेरे मंत्र से दुगने प्रणव (ॐ) का जप करता है वह निःसन्देह

मेरा स्वरूप हो. जाता है'।विभीषण ने पुनः प्रार्थना की- 'जो इतना करने में भी असमर्थ हो, वो क्या करे?'

तब श्रीराम ने कहा- वह तीन पद्यों का गायत्रीमंत्र का पुरश्चरण करें। जो इसमें भी असमर्थ हो, वह मेरी 'गीता' (रामगीता) पढे और मेरे 'सहस्रनाम' का जप करे (यह सहस्रनाम मेरे विश्वरूप का परिचायक है)। अथवा मेरे १०८ नामों का जप करे। अथवा नारद द्वारा कहे गये 'रामस्तवराज' का पाठ करे। अथवा हनुमानजी द्वारा कहे गये मंत्र राजात्मक स्रोत्र' का पाठ करे। अथवा 'सीतास्रोत्र' या 'रामरक्षा स्रोत्र' आदि स्रोत्रों से मेरी स्तुति करे। ऐसा करने से वे भी मेरे ही समान हो जाते हैं, इसमें सन्देह नहीं है। ॥१४॥

इति रामरहस्योपनिषदि प्रथमोऽध्यायः ॥ १॥

श्रीरामोपनिषद् का प्रथम अध्याय समाप्त हुआ।

॥ श्री हरि ॥

॥ श्रीरामरहस्योपनिषत् ॥

॥द्वितीयोऽध्यायः द्वितीय अध्याय॥

सनकाद्या मुनयो हनूमन्तं पप्रच्छुः ।
आञ्जनेय महाबल तारकब्रह्मणो रामचन्द्रस्य
मन्त्रग्रामं नो ब्रूहीति ।
हनूमान्होवाच ।
वह्निस्थं शयनं विष्णोरर्धचन्द्रविभूषितम् ।
एकाक्षरो मनुः प्रोक्तो मन्त्रराजः सुरद्रुमः ॥ १॥

सनकादि ऋषियों ने श्रीहनुमान् जी से पूछा- महाबली अञ्जनीनन्दन् । भगवान राम ही तारक हैं, परब्रह्म हैं। इनके मन्त्रों का उपदेश आप हम सभी के लिए करें। हनूमान जी ने कहा- र वर्ण पर आ की मात्रा और अनुसावर लगाने पर 'रां' यह एकाक्षर मंत्र कल्पवृक्ष जैसा है। ॥१॥

ब्रह्मा मुनिः स्याद्गायत्रं छन्दो रामस्य देवता ।
दीर्घार्धेन्दुयुजाङ्गानि कुर्याद्बह्न्यात्मनो मनोः ॥ २॥

इस के ऋषि ब्रह्मा, गायत्री छन्द और राम देवता हैं। दीर्घ आ अनुस्वार और अग्नि बीज 'र' मिलाकर बने इस मंत्र का विनियोग अभीष्ट सिद्धि के लिए होता है।

बीजशक्त्यादि बीजेन इष्टार्थे विनियोजयेत् ।
सरयूतीरमन्दारवेदिकापङ्कजासने ॥ ३॥

श्यामं विरासनासीनं ज्ञानमुद्रोपशोभितम् ।
वामोरुन्यस्ततद्धस्तं सीतालक्ष्मणसंयुतम् ॥ ४॥

सरयू तट पर मन्दार वृक्ष के नीचे वेदी पर कमलासन के ऊपर वीरासन से आसीन, ज्ञानमुद्रा से शोभित बाएं घुटने पर हाथ रखे हुए सीता लक्ष्मण से युक्त। ॥३-४॥

अवेक्षमाणमात्मानमात्मन्यमिततेजसम् ।
शुद्धस्फटिकसंकाशं केवलं मोक्षकाङ्क्षया ॥ ५॥

अमित तेजस्वी, शुद्ध स्फटिक जैसे प्रकाशित, भगवान राम हमारी ओर देख रहे हैं, यह ध्यान करते. हुए, मोक्ष की ही इच्छा से इस मन्त्र का १२ लाख जप करना चाहिए।।५।।

चिन्तयन्परमात्मानं भानुलक्षं जपेन्मनुम् ।
वह्निर्नारायणो नाड्यो जाठरः केवलोऽपि च ॥ ६॥

भगवान राम के मन्त्र का ध्यान एवं जप परमात्मा, भानु, अग्नि, नारायण, नाद एवं कैवल्य पद के रूप में करना चाहिए।।६।।

द्व्यक्षरो मन्त्रराजोऽयं सर्वाभीष्टप्रदस्ततः ।
एकाक्षरोक्तमृष्यादि स्यादाद्येन षडङ्गकम् ॥ ७॥
तारमायारमानङ्गवाक्स्वबीजैश्च षड्विधः ,
त्र्यक्षरो मन्त्रराजः स्यात्सर्वाभीष्टफलप्रदः ॥ ८॥

'राम' यह दो अक्षर का मन्त्र सभी अभीष्ट को देने वाला है। एकाक्षर मन्त्र 'रा' में कह गये ऋषि आदि इस के भी हैं । षडंग्यास 'रां' से ही करना चाहिए। राम के पूर्व 'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं रां' इन ६ बीज मंत्रों से लिसी भी एक को लगाने पर तीन अक्षरों का मंत्र ६ प्रकार का होता है जो सर्व अभीष्ट प्रद है। ॥७-८॥

द्व्यक्षरश्चन्द्रभद्रान्तो द्विविधश्चतुरक्षरः ।
ऋष्यादि पूर्ववज्ज्ञेयमेतयोश्च विचक्षणैः ॥ ९॥

राम के बाद 'चंद्र' य 'भद्र' लगाने पर चार अक्षरों का मंत्र दो प्रकार का होता है। इन दोनों मंत्रों (रामचंद्र, रामभद्र) के भी ऋषि आदि पूर्ववत हैं।॥९॥

सप्रतिष्ठौ रमौ वायौ हृत्पञ्चार्णो मनुर्मतः ।
विश्वामित्रऋषिः प्रोक्तः पङ्क्तिश्छन्दोऽस्य देवता ॥१०॥

रामभद्रो बीजशक्तिः प्रथमार्णमिति क्रमात् ।
भ्रूमध्ये हृदि नाभ्यूर्वोः पादयोर्विन्यसेन्मनुम् ॥ ११॥

रामाय नमः, यह पंचक्षर मंत्र (रामाय नमः) है। इसके विश्वामित्र ऋषि पंक्ति छंद रामभद्र देवता 'रां' शक्ति है। भौंहौं के मध्य भाड़ हृदय नाभि दोनों अरु पैर में इसका षडंग न्यास होता है। ॥१०-११॥

षडङ्गं पूर्ववद्विद्यान्मन्त्राणैर्मनुनास्त्रकम् ।
मध्ये वनं कल्पतरोर्मूले पुष्पलतासने ॥ १२॥

लक्ष्मणेन प्रगुणितमक्ष्णः कोणेन सायकम् ।
अवेक्षमाणं जानक्या कृतव्यजनमीश्वरम् ॥ १३॥

जटाभारलसच्छीर्षं श्यामं मुनिगणावृतम् ।
लक्ष्मणेन धृतच्छत्रमथवा पुष्पकोपरि ॥ १४॥

दशास्यमथनं शान्तं ससुग्रीवविभीषणम् ।
एवं लब्ध्वा जयार्थी तु वर्णलक्षं जपेन्मनुम् ॥ १५॥

पूर्ववत् मन्त्राक्षरों से न्यास करें। नन्दन वन के मध्य कल्प वृक्ष है। उसके नीचे पुष्पलता का आसन है। लक्ष्मण जी कनखियों से भगवान का धनुष देख रहे हैं। जानकी जी पंखा कर रही है। शिर पर जटा भार सुशोभित है, लक्ष्मण जी छत्र लिये हैं, मुनि मण्डली चारों ओर विराजमान है, रावणहन्ता श्यामवर्ण प्रभु सुग्रीव और विभीषण को साथ लिये पुष्पासन पर अथवा पुष्प के विमान पर शान्तिभाव से

आसीन है। विजय की कामना करने वाले को यह ध्यान करते हुए ५ लाख मन्त्रजप करना चाहिए। ॥१२-१५॥

स्वकामशक्तिवाग्लक्ष्मीस्तवाद्याः पञ्चवर्णकाः ।
षडक्षरः षड्विधः स्याच्चतुर्वर्गफलप्रदः ॥ १६॥

'रामाय नमः' इससे पहले 'रा' 'क्लीं' 'ह्रीं' 'ऐं' 'श्री' इन बीज मन्त्रों में किसी एक को लगाने पर छह अक्षर का मंत्र छह प्रकजर का हो जाता है। यह धर्म अर्थ काम मोक्ष प्रदायक है। ॥१६॥

पञ्चाशन्मातृकामन्त्रवर्णप्रत्येकपूर्वकम् ।
लक्ष्मीवाङ्मन्मथादिश्च तारादिः स्यादनेकधा ॥ १७॥

पचास मातृकाओं के वर्ण, श्री, ऐं, क्लीं, ॐ इनमें से किसी भी एक को रामाय नमः के पहले लगाने पर यह षडाक्षर मन्त्र अनेक प्रकार से बनता है। ॥१७॥

श्रीमायामन्मथैकैक बीजाद्यन्तर्गतो मनुः ।
चतुर्वर्णः स एव स्यात्षड्वर्णो वाञ्छितप्रदः ॥१८॥

श्री माय बीज ह्रीं कामबीज क्लीं आदि में से कोई भी बीज आदि, अंत में तथा बीच में रामचंद्र य रामभद्र रखने पर यह चार अक्षरो वाला (रामचन्द्र रामभद्र) मन्त्र छह अक्षरों का बनता है। (श्रीरामचन्द्र श्री आदि यह मंत्र अभीष्ट सिद्धि प्रदान करने वाला है। ॥१८॥

स्वाहान्तो हुंफडन्तो वा नत्यन्तो वा भवेदयम् ।
अष्टाविंशत्युत्तरशतभेदः षड्वर्ण ईरितः ॥ १९॥

किसी भी बीजमंत्र के बाद 'रामाय' तथा अंत में 'स्वाहा' या 'नमः' या 'हुँ फट' लगाकर इस षडाक्षर मंत्र के एक सौ अट्ठाईस भेद बन जाते हैं। ॥१९॥

ब्रह्मा संमोहनः शक्तिर्दक्षिणामूर्तिरेव च ।
अगस्त्यश्च शिवः प्रोक्ता मुनयोऽक्रमादिमे ॥ २०॥

ब्रह्मा, सम्मोहन शक्ति, दक्षिणामूर्ति अगस्त्य, शिव इन मन्त्रों के क्रमशः मुनि हैं। ॥२०॥

छन्दो गायत्रसंज्ञं च श्रीरामश्चैव देवता ।
अथवा कामबीजादेर्विश्वामित्रो मुनिर्मनोः ॥ २१॥

छंद गायत्री, श्री राम देवता हैं, अथवा क्लीं जिसके आदि में है। उन मंत्रों ले (क्लीं रामाय नमः आदि के) विश्वामित्र ऋषि हैं। ॥२१॥

छन्दो देव्यादिगायत्री रामभद्रोऽस्य देवता ।
बीजशक्ती यथापूर्वं षड्वर्णान्विन्यसेत्क्रमात् ॥ २२॥

आदि गायत्री छन्द है, रामभद्र देवता हैं, बीज और शक्ति पूर्ववत् हैं। इस प्रकार षडाक्षर मन्त्रों का एक एक अक्षर से षडङ्गन्यास होता है।॥२२॥

ब्रह्मरन्ध्रे भ्रुवोर्मध्ये हृन्नाभ्यूरुषु पादयोः ।
बीजैः षड्दीर्घयुक्तैर्वा मन्त्रार्णैर्वा षडङ्गकम् ॥ २३॥

ब्रह्मरन्ध्र, भूमध्य, हृदय, नाभि, घुटने, पैर इन ६ अंगो में मन्त्र के प्रत्येक वर्ण में दीर्घ आं लगाकर 'रा+रां+ मां+यांना+मां' या प्रथम के बीजाक्षर (रां+हीं आदि) से षडङ्गन्यास होता है। ॥२३॥

कालाभोधरकान्तिकान्तमनिशं वीरासनाध्यासितं
मुद्रां ज्ञानमयीं दधानमपरं हस्तांबुजं जानुनि ।
सीतां पार्श्वगतां सरोरुहकरां विद्युन्निभां राघवं
पश्यन्तं मुकुटाङ्गदादिविविधाकल्पोज्ज्वलाङ्गं भजे ॥ २४॥

श्याम वर्ण मेघ की कान्ति वाले, नित्य सुन्दर, वीरासन से आसीन, ज्ञानमुद्रा धारी, घुटने पर कर कमल रखे, मुकुट-बाजूबन्द आदि विविध अलङ्करण युक्त श्रीरामचन्द्र जी प्रकाशित होते हुए अङ्गों वाले हैं, श्री सीता जी इनके पास हाथ में कमल लिये, विद्युत छटा सम्पन्न तथा प्रभु से देखी जाती हुयी विराज रही है। मैं इन प्रभु का भजन करता हूँ ॥२४॥

श्रीरामश्चन्द्रभद्रान्तो ङेन्तो नतियुतो द्विधा ।
सप्ताक्षरो मन्त्रराजः सर्वकामफलप्रदः ॥ २५॥

रामचन्द्राय तथा रामभद्राय के बाद नमः लगाने से सात अक्षरों का मन्त्र दो प्रकार का होता है जो सभी कामनाओं का पूरक है। ॥२५॥

तारादिसहितः सोऽपि द्विविधोऽष्टाक्षरो मतः ।
तारं रामश्चतुर्थ्यतः क्रोडास्त्रं वह्नितल्पगा ॥ २६॥

यदि इसी से पहले ॐ लगाया जाए तो यह दोनों अष्टाक्षर मंत्र हो जाते हैं। ॐ नमो रामाय हुँ फट स्वाहा यह भी अष्टाक्षर मंत्र है। ॥२६॥

अष्टार्णोऽयं परो मन्त्रो ऋष्यादिः स्यात्षडर्णवत् ।
पुनरष्टाक्षरस्याथ राम एव ऋषिः स्मृतः ॥ २७॥

गायत्रं छन्द इत्यस्य देवता राम एव च ।
तारं श्रीबीजयुग्मं च बीजशक्त्यादयो मताः ॥ २८॥

षडाक्षर के समान इसके भी ऋषि आदि हैं। दूसरे अष्टाक्षर के राम ऋषि, गायत्री छन्द, राम ही देवता, ॐ बीज तथा श्रीं श्रीं शक्ति है। ॥२८॥

षडङ्गं च ततः कुर्यान्मन्त्राणैरेव बुद्धिमान् ।
तारं श्रीबीजयुग्मं च रामाय नम उच्चरेत् ॥ २९॥

बुद्धिमान् को मन्त्राक्षरों से षडङ्गन्यास करना चाहिए (ॐ हृदयाय नमः, श्री शिर से स्वाहा, रामाय शिवाये वषट्, नमः कवचायहुम्, श्री नेत्राभ्यां वौषट्, ॐ अस्याय फट् कहना चाहिए) ॥२९ ॥

ग्लौंमों बीजं वदेन्मायां हृद्रामाय पुनश्च ताम् ।
शिवोमाराममन्त्रोऽयं वस्वर्णस्तु वसुप्रदः ॥ ३०॥

ग्लौं ॐ ह्रीं नमः रामाय ग्लौं यह नवाक्षर मन्त्र शिव उमा राम बीजों से युक्त है, यह धन प्रदायक मन्त्र है ॥३०॥

ऋषिः सदाशिवः प्रोक्तो गायत्रं छन्द उच्यते ।
शिवोमारामचन्द्रोऽत्र देवता परिकीर्तितः ॥ ३१॥

इसके ऋषि सदाशिव, गायत्री छन्द, शिव उमा रामचन्द्र देवता हैं ॥३१॥

दीर्घया माययाङ्गानि तारपञ्चार्णयुक्तया ।
रामं त्रिनेत्रं सोमार्धधारिणं शूलिनं परम् ।
भस्मोद्धूलितसर्वाङ्गं कपर्दिनमुपास्महे ॥ ३२॥

इसमें ॐ से शिव, ह्रीं से उमा तथा नमः रामाय से राम की उपासना है। मैं श्री राम, त्रिनेत्र, अर्धचंद्र धारी त्रिशूलधारी सर्वांग में भस्म रमाए भगवान शिव की उपासना करता हूँ। ॥३२॥

रामाभिरामां सौन्दर्यसीमां सोमावतंसिकाम् ।

पाशाङ्कुशधनुर्बाणधरां ध्यायेत्त्रिलोचनाम् ॥ ३३॥

सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी, सौन्दर्य सीमा, चन्द्र धारिणी, पाशअङ्कुश–धनुष-बाण धारिणी, त्रिनयना भगवती का मैं ध्यान करना हूँ। ॥३३॥

ध्यायन्नेवं वर्णलक्षं जपतर्पणतत्परः ।
बिल्वपत्रैः फलैः पुष्पैस्तिलाज्यैः पङ्कजैर्हुनेत् ॥ ३४॥

इस प्रकार ध्यान करते हुए मन्त्र के वों की संख्या के लाख गुना जप कर, (दशांश) तप्रण कर, बिल्वपत्र, फल, कमल, पुष्प, तिल, घी से हवन (संख्यानुसार) करना चाहिए। ॥३४।

स्वयमायान्ति निधयः सिद्धयश्च सुरेप्सिताः ।
पुनरष्टाक्षरस्याथ ब्रह्मगायत्र राघवाः ॥ ३५॥

ऋष्यादयस्तु विज्ञेयाः श्रीबीजं मम शक्तिकम् ।
तत्प्रीत्यै विनियोगश्च मन्त्राणैरङ्गकल्पना ॥ ३६॥

इस से सारी निधि और सिद्धि प्राप्त होती है जिन्हें देवगण चाहते हैं। श्रीराम: शरणं मम इस अष्टाक्षर मन्त्र के ब्रह्मा ऋषि, गायत्री छन्द और राघव देवता है। श्री बीज है, 'मम' शक्ति है। श्रीराम प्रीत्यार्थ मन्त्र का विनियोग होता है। मन्त्र के अक्षरों से न्यास करना चाहिए। ॥३५-३६॥

केयूराङ्गदकङ्कणैर्मणिगतैर्विद्योतमानं सदा
रामं पार्वणचन्द्रकोटिसदृशच्छत्रेण वै राजितम् ।
हेमस्तम्भसहस्रषोडशयुते मध्ये महामण्डपे
देवेशं भरतादिभिः परिवृतं रामं भजे श्यामलम् ॥ ३७॥

कपूर, अङ्गद, कङ्कण के मणियुक्त आभूषणों से प्रकाशित करोड़ों पूर्ण चन्द्र तुल्य छत्र से शोभित, सोलह सहस्र स्वर्ण खम्भयुक्त महामण्डप में भरत आदि से घिरे, श्यामवर्ण श्रीराम का मैं भजन करता हूँ।॥३७॥

किं मन्त्रैर्बहुभिर्विनश्वरफलैरायाससाध्यैर्वृता
किंचिल्लोभवितानमात्रविफलैः संसारदुःखावहैः ।
एकः सन्नपि सर्वमन्त्रफलदो लोभादिदोषोज्झितः
श्रीरामः शरणं ममेति सततं मन्त्रोऽयमष्टाक्षरः ॥ ३८॥

विनाशीफल देने वाले, परिश्रम साध्य, अर्थ लोभ रूप फल देने वाले, संसार के दुःखों से पूर्ण, बहुत मन्त्रों से क्या लाभ? समस्त मन्त्रों का फल देने वाला, लोभ आदि दोष का निवारक एक अष्टाक्षर मन्त्र श्रीराम शरणं मम ही पर्याप्त है ॥३८॥

एवमष्टाक्षरः सम्यक् सप्तधा परिकीर्तितः ।
रामसप्ताक्षरो मन्त्र आद्यन्ते तारसंयुतः ॥३९॥

यह अष्टाक्षर भी बीज भेद से सात प्रकार का है। रामः शरणं मम के आदि अन्त में ॐ लगाने पर नवाक्षर मन्त्र बन जाता है। षडाक्षर जैसा ही इसका भी न्यास है। ॥३९॥

नवार्णो मन्त्रराजः स्याच्छेषं षड्वर्णवन्न्यसेत् ।
जानकीवल्लभं ङेन्तं वह्नेर्जायाहुमादिकम् ॥ ४०॥

यह नवाक्षर मंत्रराज सर्वाभीष्ट फलप्रद है। षडाक्षर हैस ही इसका भी न्यास है। 'जानकी वल्लभाए स्वाहा हुम' यह दस अक्षरों का मंत्र सर्वाभीष्ट फलप्रद है। ॥४०॥

दशाक्षरोऽयं मन्त्रः स्यात्सर्वाभीष्टफलप्रदः ।
दशाक्षरस्य मन्त्रस्य वसिष्ठोऽस्य ऋषिर्विराट् ॥ ४१॥

छन्दोऽस्य देवता रामः सीतापाणिपरिग्रहः ।
आद्यो बीजं द्विठः शक्तिः कामेनाङ्गक्रिया मता ॥ ४२॥

इस दशाक्षर मन्त्र के वशिष्ठ ऋषि, विराट् छन्द, राम देवता, जानकी वल्लभाय बीज, स्वाहा शक्ति है, कामबीज क्लीं से इसका न्यास किया जाता है। ॥४१-४२॥

शिरोललाटभ्रूमध्ये तालुकर्णेषु हृद्यपि ।
नाभूरुजानुपादेषु दशार्णान्विन्यसेन्मनोः ॥ ४३॥

मंत्र के दस अक्षरों का क्रमश: सिर, ललाट, भूमध्य, तालू, दोनों कान, हृदय, नाभि, दोनों घुटनों में न्यास होता है। ॥४३॥

अयोध्यानगरे रत्नचित्रे सौवर्णमण्डपे ।

मन्दारपुष्पैराबद्धविताने तोरणाञ्चिते ॥ ४४॥

अयोध्यापुरी में अनेक रत्नों से युक्त सुवर्णमण्डप है, वहां मन्दार पुष्पों से मण्डप सजाया गया है, तोरण द्वार सजा है। ॥४४॥

सिंहासने समासीनं पुष्पकोपरि राघवम् ।
रक्षोभिर्हरिभिर्देवैर्दिव्ययानगतैः शुभैः ॥ ४५॥

पुष्प के सिंहासन पर भगवान राम आसीन हैं। दिव्य विमानों पर राक्षस-श्रीविष्णु-देवगण बैठे हुये स्तुतिगान कर रहे हैं। ॥४५॥

संस्तूयमानं मुनिभिः प्रह्वैश्च परिसेवितम् ।
सीतालङ्कृतवामाङ्गं लक्ष्मणेनोपसेवितम् ॥४६॥

मुनिजन, शरणागत जनों के साथ सेवा में तत्पर हैं, वाम भाग सीता जी से अलङकृत है, लक्ष्मण जी सेवा कर रहे हैं ॥४६॥

श्यामं प्रसन्नवदनं सर्वाभरणभूषितम् ।
ध्यायन्नेवं जपेन्मन्त्रं वर्णलक्षमनन्यधीः ॥ ४७॥

श्याम वर्ण, प्रसन्नमुख प्रभु सभी अलङ्करणों से विभूषित हैं। इस प्रकार अन्य चिन्तन से विरत ध्यान करते हुए मन्त्र वर्ण संख्यानुसार दस लाख मन्त्र जप करना चाहिए। ॥४७॥

रामं ङेन्तं धनुष्पाणयेऽन्तः स्याद्वह्निसुन्दरी ।
दशाक्षरोऽयं मन्त्रः स्यान्मुनिर्ब्रह्मा विराट् स्मृतः ॥ ४८॥

छन्दस्तु देवता प्रोक्तो रामो राक्षसमर्दनः ।
शेषं तु पूर्ववत्कुर्याच्चापबाणधरं स्मरेत् ॥ ४९॥

रामाय धनुष्पाणये स्वाहा यह दस अक्षरों का मन्त्र है। इसके ऋषि ब्रह्मा, विराट, छन्द और चापवाणघर राम देवता हैं। धनुर्धर राम का ध्यान इसमें होता है, न्याय आदि पूर्ववत् ही है। ॥४८-४९॥

तारमायारमानङ्गवाक्स्वबीजैश्च षड्विधः ।
दशार्णो मन्त्रराजः स्याद्रुद्रवर्णात्मको मनुः ॥ ५०॥

यही दशाक्षर मन्त्र ११ वों का हो जाता है जब उसमें प्रारम्भ में ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं, ऐं, रां में से कोई भी एक बीज मन्त्र लगाया जाता है। इस एकादशाक्षर मन्त्र का ६ प्रकार का रूप हो जाता है। ॥५०॥

शेषं षडर्णवज्ज्ञेयं न्यासध्यानादिकं बुधैः ।
द्वादशाक्षरमन्त्रस्य श्रीराम ऋषिरुच्यते ॥ ५१॥

जगती छन्द इत्युक्तं श्रीरामो देवता मतः ।
प्रणवो बीजमित्युक्तः क्लीं शक्तिर्ह्रीं च कीलकम् ॥ ५२॥

मन्त्रेणाङ्गानि विन्यस्य शिष्टं पूर्ववदाचरेत् ।
तारं मायां समुच्चार्य भरताग्रज इत्यपि ॥ ५३॥

न्यास और ध्यान तो इसका भी षडक्षर जैसा ही है।

(1) ॐ ह्रीं भरताग्रज राम क्लीं स्वाहा

(2)- ॐ रामाय धनुष्पाणये स्वाहा

यह १२ अक्षरों का द्वादशाक्षर मन्त्र है। इसके श्रीराम ऋषि हैं, जगती छन्द है, श्रीराम देवता हैं, प्रणव (ॐ) बीज है, क्लीं शक्ति, और ह्रीं कीलक है। मन्त्र से अङ्गन्यास करे, शेष पूर्ववत् है ॥५१-५३॥

रामं क्लीं वह्निजायान्तं मन्त्रोयं द्वादशाक्षरः ।
ॐ ह्रद्भगवते रामचन्द्रभद्रौ च ङेयुतौ ॥ ५४॥

अर्कार्णो द्विविधोऽप्यस्य ऋषिध्यानादिपूर्ववत् ।
छन्दस्तु जगती चैव मन्त्रार्णैरङ्गकल्पना ॥ ५५॥

'ॐ नमो भगवते राम चन्द्राय' तथा 'ॐ नमो भगवते रामभद्राय' यह दोनों भी द्वादशाक्षर मन्त्र हैं। ऋषि और ध्यान इनके पूर्ववत् हैं। छन्द जगती है। मन्त्र के वर्षों से अङ्गन्यास करना चाहिए। ॥५४-५५॥

श्रीरामेति पदं चोक्त्वा जयराम ततः परम् ।
जयद्वयं वदेत्प्राज्ञो रामेति मनुराजकः ॥ ५६॥

त्रयोदशार्ण ऋष्यादि पूर्ववत्सर्वकामदः ।
पदद्वयद्विरावृत्तेरङ्गं ध्यानं दशार्णवत् ॥ ५७॥

'श्रीराम जय राम जय जय राम' यह तेरह वर्ण का सर्वाभीष्टप्रद मन्त्र है। ध्यान आदि पूर्ववत् है। मन्त्र के छह शब्दों से अंगन्यास -करन्यास किया जाता है। जो दशाक्षर जैसा ही है। ॥५६-५७॥

तारादिसहितः सोऽपि स चतुर्दशवर्णकः ।
त्रयोदशार्णमुच्चार्य पश्चाद्रामेति योजयेत् ॥ ५८॥

इसी में प्रारम्भ में ॐ लगाने पर चौदह अक्षरों का मन्त्र होता है। यदि तेरह अक्षरों वाला मन्त्र कहकर बाद में 'राम' जोड़ा जाय तो १५ अक्षरों का मन्त्र हो जाता है। यह मन्त्र तो साधकों के लिए कल्पवृक्ष ही है। ॥५८॥

स वै पञ्चदशार्णस्तु जपतां कल्पभूरुहः ।
नमश्च सीतापतये रामायेति हनद्वयम् ॥ ५९॥

ततस्तु कवचास्त्रान्तः षोडशाक्षर ईरितः ।
तस्यागस्त्यऋषिश्छन्दो बृहती देवता च सः ॥ ६०॥

रां बीजं शक्तिरस्त्रं च कीलकं हुमितीरितम् ।
द्विपञ्चत्रिचतुर्वर्णैः सर्वैरङ्गं न्यसेत्क्रमात् ॥ ६१॥

'नमः सीतापतये रामाय हन हन हुं फट्' यह १६ अक्षरो का मन्त्र कहा गया है। इस के ऋषि अगस्त्य, वृहती छन्द, राम देवता, रां बीज, फट् शक्ति तथा हुं कीलक हैं। दो-पांच तीन-चार वर्णों वाले मन्त्र के शब्दों

से न्यास करना चाहिए। नमः हृदयाय नमः। सीतापतये शिरसे स्वाहा। रामाय शिखायै वषट् । हन हन कवचायहुं। हन हन नेत्राभ्यांवौषट्। हन हुं फट् अस्त्राय फट ॥५९-६१॥

तारादिसहितः सोऽपि मन्त्रः सप्तदशाक्षरः ।
तारं नमो भगवते रां ङेन्तं महा ततः ॥ ६२॥

पुरुषाय पदं पश्चाद्धृदन्तोऽष्टदशाक्षरः ।
विश्वामित्रो मुनिश्छन्दो गायत्रं देवता च सः ॥ ६३॥

पूर्वोक्त मन्त्र ॐ सहित होने पर १७ सत्रह अक्षरों का होता है। 'ॐ नमो भगवते रामाय महापुरुषाय नमः' यह अट्ठारह अक्षरों का मंत्र है। इसके विश्वामित्र ऋषि, गायत्री छंद, राम देवता हैं। ॥६२-६३॥

कामादिसहितः सोऽपि मन्त्र एकोनविंशकः ।
तारं नामो भगवते रामायेति पदं वदेत् ॥ ६४॥

सर्वशब्दं समुच्चार्य सौभाग्यं देहि मे वदेत् ।
वह्निजायां तथोच्चार्य मन्त्रो विंशार्णको मतः ॥ ६५॥

इसी मन्त्र में क्लीं लगाने पर १९ अक्षरों का मन्त्र बनता है। 'ॐ नमो भगवते रामाय सर्व सौभाग्यं देहि में स्वाहा' – यह बीस अक्षरों का मंत्र है ॥ ६५॥

तारं नमो भगवते रामाय सकलं वदेत् ।
आपन्निवारणायेति वह्निजायां ततो वदेत् ॥ ६६॥

ॐ नमो भगवते रामाय सकलापन्निवारणाय स्वाहा यह इक्कीस अक्षरों का मंत्र है, यह सर्वाभीष्ट फल देने वाला है ॥ ६६॥

एकविंशार्णको मन्त्रः सर्वाभीष्टफलप्रदः ।
तारं रमा स्वबीजं च ततो दाशरथाय च ॥ ६७॥

ततः सीतावल्लभाय सर्वाभीष्टपदं वदेत् ।
ततो दाय हृदन्तोऽयं मन्त्रो द्वाविंशदक्षरः ॥ ६८॥

'ॐ श्रीं रां दाशरथाय सीतावल्लभाय सर्वाभीष्टदाय नमः' यह बाइस अक्षरों का मन्त्र है। यह मन्त्र हृदय के सर्व फल देने वाला है ॥६७-६८॥

तारं नमो भगवते वीररामाय संवदेत् ।
कल शत्रून् हन द्वन्द्वं वह्निजायां ततो वदेत् ॥ ६९॥

'ॐ नमो भगवते वीरंरामाय सकलशत्रून् हन हन स्वाहा' यह तेईस अक्षरों का शत्रुनाशक मन्त्र है। ॥६९॥

त्रयोविंशाक्षरोमन्त्रः सर्वशत्रुनिबर्हणः ।
विश्वामित्रो मुनिः प्रोक्तो गायत्रीछन्द उच्यते ॥ ७०॥

देवता वीररामोऽसौ बीजाद्याः पूर्ववन्मताः ।
मूलमन्त्रविभागेन न्यासान्कृत्वा विचक्षणः ॥ ७१॥

इस २३ तेईस अक्षरों के शत्रुनाशक मन्त्र के विश्वामित्र ऋषि, गायत्री छन्द, वीरराम देवता हैं, बीज आदि पूर्ववत् है। मूलमन्त्र के शब्दों को विभाजित कर न्यास करना चाहिए। ॥७०-७१॥

शरं धनुषि सन्धाय तिष्ठन्तं रावणोन्मुखम् ।
वज्रपाणिं रथारूढं रामं ध्यात्वा जपेन्मनुम् ॥ ७२॥

धनुष पर बाण सन्धान करते, रावण के सामने स्थित रथारूढ़ राम का ध्यान का मन्त्र जप करें। ॥७२॥

तारं नमो भगवते श्रीरामाय पदं वदेत् ।
तारकब्रह्मणे चोक्त्वा मां तारय पदं वदेत् ॥ ७३॥

नमस्तारात्मको मन्त्रश्चतुर्विंशतिमन्त्रकः ।
बीजादिकं यथा पूर्वं सर्वं कुर्यात्षडर्णवत् ॥ ७४॥

ॐ नमो भगवते श्री रामाय तारकब्रह्मणे मां तारय नमः ॐ यह २४ अक्षरों का मन्त्र है। षडाक्षर जैसा इसका बीज आदि सब हैं।॥७३-७४॥

कामस्तारो नतिश्चैव ततो भगवतेपदम् ।
रामचन्द्राय चोच्चार्य सकलेति पदं वदेत् ॥ ७५॥

जनवश्यकरायेति स्वाहा कामात्मको मनुः ।
सर्ववश्यकरो मन्त्रः पञ्चविंशतिवर्णकः ॥ ७६॥

'क्लीं ॐ नमो भगवते रामचन्द्रय सकलजनवश्यकराय स्वाहा' यह २५ पचीस अक्षरों का मन्त्र है, यह वशीकरण मंत्र सभी को वश में कर लेता है। ॥७५-७६॥

आदौ तारेण संयुक्तो मन्त्रः षड्विंशदक्षरः ।
अन्तेऽपि तारसंयुक्तः सप्तविंशतिवर्णकः ॥ ७७॥

इसी में पहले ॐ लगाने पर २६ अक्षर तथा बाद में भी ॐ लगाने पर २७ अक्षर हो जाते हैं। ॥७७॥

तारं नमो भगवते रक्षोघ्नविशदाय च ।
सर्वविघ्नान्समुच्चार्य निवारय पदद्वयम् ॥ ७८॥

स्वाहान्तो मन्त्रराजोऽयमष्टाविंशतिवर्णकः ।
अन्ते तारेण संयुक्त एकोनत्रिंशदक्षरः ॥ ७९॥

'ॐ नमो भगवते रक्षोघ्नविशदाय सर्वविघ्नान्समुच्चार्य निवारय स्वाहा' यह २८ अट्ठाइस अक्षरों का मंत्र है। इसी में अंत में ॐ लगाने पर २९ अक्षरों का मंत्र हो जाता है। ॥७८-७९॥

आदौ स्वबीजसंयुक्तस्त्रिंशद्वर्णात्मको मनुः ।
अन्तेऽपि तेन संयुक्त एकत्रिंशात्मकः स्मृतः ॥ ८०॥

पहले इसी मंत्र में 'रां' लगा देने से तीस अक्षरों का मंत्र बनता है। और यदि अंत में भी 'रां' लगाया जाए तो ३१ अक्षरों वाक्य मंत्र हो जाता है। ॥८०॥

रामभद्र महेश्वास रघुवीर नृपोत्तम ।
भो दशास्यान्तकास्माकं श्रियं दापय देहि मे ॥ ८१॥

आनुष्टुभ ऋषी रामश्छन्दोऽनुष्टुप्स देवता ।
रां बीजमस्य यं शक्तिरिष्टार्थे विनियोजयेत् ॥ ८२॥

यह ३२ बत्तीस अक्षरों का मन्त्र है। इसके आनुष्टुभ ऋषि, अनुष्टुप छन्द और राम देवता हैं। 'रा' बीज, 'यं' शक्ति है, इष्ट प्राप्ति में इसका विनियोग होता है। ॥८१-८२॥

पादं हृदि च विन्यस्य पादं शिरसि विन्यसेत् ।
शिखायां पञ्चभिर्न्यस्य त्रिवर्णैः कवचं न्यसेत् ॥ ८३॥

नेत्रयोः पञ्चवर्णैश्च दापयेत्यस्त्रमुच्यते ।
चापबाणधरं श्यामं ससुग्रीवबिभीषणम् ॥ ८४॥

हत्वा रावणमायान्तं कृतत्रैलोक्यरक्षणम् ।
रामचन्द्रं हृदि ध्यात्वा दशलक्षं जपेन्मनुम् ॥ ८५॥

मंत्र के प्रथम चरण से हृदय दूसरे से शिर, आफिर आगे के पाँच वर्णों से शिखा के तीन वर्णों के कवच फिर पाँच वर्णों से अस्त्र न्यास करना चाहिए। धनुष बाणधारी, सुग्रीव विभीषण सहित, त्रैलोक्यरक्षक श्रीरामभद्र का ध्यान करें जिन्होंने सम्मुख आए रावण का संहार किया। ध्यान कर उक्त मंत्र का दस लाख जप करना चाहिए। ॥८३ -८५ ॥

वदेद्दाशरथायेति विद्महेति पदं ततः ।
सीतापदं समुद्धृत्य वल्लभाय ततो वदेत् ॥ ८६॥

धीमहीति वदेत्तन्नो रामश्चापि प्रचोदयात्
तारादिरेषा गायत्री मुक्तिमेव प्रयच्छति ॥ ८७॥

इस मंत्र से परम पद, समृद्धि एवं श्री सीताराम पद प्राप्त है। ॐ दशरथाय विद्महे सीता वल्लभाय धीमहि तन्नो रामः प्रचोदयात् यही राम गायत्री है, यह मुक्ति प्रदान करने वाला मन्त्र है ॥८६ -८७॥

मायादिरपि वैदुष्ट्यं रामादिश्च श्रियःपदम् ।

मदनेनापि संयुक्तः स मोहयति मेदिनीम् ॥ ८८॥

इसी मन्त्र में ह्रीं क्लीं पहले लगाया जाय तथा रामः से पहले 'श्री' लगाया जाय तो यह सम्मोहन मन्त्र बन जाता है , सारी पृथ्वी को मोहित कर देता है ॥८८॥

पञ्च त्रीणि षडर्णैश्च त्रीणि चत्वारि वर्णकैः ।
चत्वारि च चतुर्वर्णैरङ्गन्यासं प्रकल्पयेत् ॥ ८९॥

क्रमश; मंत्र के पाँच (दशरथाय), तीन (विद्महे), छह (सीता वल्लभाय), तीन (धीमहि), चार (तन्नो रामः), चार (प्रचोदयात्) अक्षरों से अंगन्यास कर न्यास करना चाहिए। ॥८८॥

बीजध्यानादिकं सर्वं कुर्यात्षड्वर्णवत्क्रमात् ।
तारं नमो भगवते चतुर्थ्या रघुनन्दनम् ॥ ९०॥

रक्षोघ्नविशदं तद्वन्मधुरेति वदेत्ततः ।
प्रसन्नवदनं ङेन्तं वदेदमिततेजसे ॥ ९१॥

बलरामौ चतुर्थ्यन्तौ विष्णुं ङेन्तं नतिस्ततः ।
प्रोक्तो मालामनुः सप्तचत्वारिंशद्भिरक्षरैः ॥ ९२॥

बीज-ध्यान आदि इसका भी षडाक्षर जैसा ही है। ४७ सैंतालीस अक्षरों का राममन्त्र इस प्रकार है- 'ॐ नमो भगवते रघुनन्दनाय रक्षोघ्नविशदाय मधुराय प्रसन्नवदनाय अमिततेजसे बलरामाय विष्णवे नमः' ॥९०-९२॥

ऋषिश्छन्दो देवतादि ब्रह्मानुष्टुभराघवाः ।
सप्तर्तुसप्तदश षड्रुद्रसंख्यैः षडङ्गकम् ॥ ९३॥

इसके ब्रह्मा ऋषि, अनुषटुप छंद, राघव देवता हैं। मंत्र के क्रमश: सात, छह, सात, दस, छह तथा ग्यारह अक्षरों से अंगन्यास- कर न्यास होता है। ॥९३॥

ध्यानं दशाक्षरं प्रोक्तं लक्षमेकं जपेन्मनुम् ।
श्रियं सीतां चतुर्थ्यन्तां स्वाहान्तोऽयं षडक्षरः ॥ ९४॥

दशाक्षर मेंअत कहा गया ध्यान 'श्लोक ४४ से ४६१/२' का भी किया जाता है। श्री सीतायै स्वाहा' यह षडाक्षर मन्त्र है। मन्त्र भी की जप संख्या एक लाख है। ॥९४॥

जनकोऽस्य ऋषिश्छन्दो गायत्री देवता मनोः ।
सीता भगवती प्रोक्ता श्रीं बीजं नतिशक्तिकम् ॥ ९५॥

कीलं सीता चतुर्थ्यन्तमिष्टार्थे विनियोजयेत् ।

दीर्घस्वरयुताद्येन षडङ्गानि प्रकल्पयेत् ॥ ९६॥

'श्री सीतायै नमः' यह षडाक्षर मन्त्र है। इस मन्त्र के जनक ऋषि, गायत्री छन्द तथा सीताभगवती देवता हैं। श्री बीज है। नमः शक्ति है, सीतायै कीलक है, इष्ट सिद्धि में विनियोग होता है। 'श्रीं' इस बीज मंत्र से षडंग न्यास हैं। ॥९५- ९६॥

स्वर्णाभामम्बुजकरां रामालोकनतत्पराम् ।
ध्यायेत्षट्कोणमध्यस्थरामाङ्कोपरि शोभिताम् ॥ ९७॥

सुवर्ण की आभावाली, हाथ में कमल लिये, श्रीराम के दर्शन में तत्पर, षट्कोण के मध्य स्थित श्रीराम के अङ्क में विराजमान सीताजी का ध्यान करता हूँ (यह मन्त्र का ध्यान है) ॥९७॥

लकारं तु समुद्धृत्य लक्ष्मणाय नमोन्तकः ।
अगस्त्यऋषिरस्याथ गायत्रं छन्द उच्यते ॥ ९८॥

लक्ष्मणो देवता प्रोक्तो लं बीजं शक्तिरस्य हि ।
नमस्तु विनियोगो हि पुरुषार्थ चतुष्टये ॥ ९९॥

लक्ष्मण जी का मंत्र है। 'लं लक्ष्मणाय नमः' इसके अगस्त ऋषि गायत्री छंद लक्ष्मण देवता लं बीज और 'नमः' शक्ति है। पुरुषार्थ चतुष्टय में इस मन्त्र का विनियोग होता है। ॥९८-९९॥

दीर्घभाजा स्वबीजेन षडङ्गानि प्रकल्पयेत् ।

द्विभुजं स्वर्णरुचिरतनुं पद्मनिभेक्षणम् ॥ १००॥

धनुर्बाणधरं देवं रामाराधनतत्परम् ।
भकारं तु समुद्धृत्य भरताय नमोन्तकः ॥ १०१॥

'लां' इस बीजमंत्र से लं बीज से आ लगा कर इसका षडंगन्यास सम्पन्न होता है। (लां हृदयाया नमः, लां शिर से स्वाहा आदि) ध्यान मन्त्र यह है- दो भुजा वाले, स्वर्ण की कान्ति युक्त सुन्दर शरीर वाले, कमलवत् नेत्रों से सुशोभित, श्रीराम की सेवा में तत्पर लक्ष्मण जी का ध्यान करता हूँ। भरत जी का मंत्र है 'भं भरताए नमः'। ॥१००-१०१॥

अगस्त्यऋषिरस्याथ शेषं पूर्ववदाचरेत् ।
भरतं श्यामलं शान्तं रामसेवापरायणम् ॥ १०२॥

इसके अगस्त्य ऋषि आदि पूर्ववत् हैं। श्यामल वर्ण, सुन्दर, शान्त, श्रीराम की सेवा में तत्पर, धनुष बाणधारी, कैकेयीपुत्र वीर भरत जी को मैं प्रणाम करता हूँ (यह ध्यान है।) ॥१०२॥

धनुर्बाणधरं वीरं कैकेयीतनयं भजे ।
शं बीजं तु समुद्धृत्य शत्रुघ्नाय नमोन्तकः ।
ऋष्यादयो यथापूर्वं विनियोगोऽरिनिग्रहे ॥ १०३॥

'शं शत्रुघ्नाय नमः' यह शत्रुघ्नजी का मन्त्र है। वे कैकेयी पुत्र हैं, एवं शत्रु विजय में इसका विनियोग होता है। ऋषि आदि पूर्ववत हैं। ॥१०३॥

द्विभुजं स्वर्णवर्णाभं रामसेवापरायणम् ।
लवणासुरहन्तारं सुमित्रातनयं भजे ॥ १०४॥

द्विभुज, स्वर्ण के वर्ण वाले, राम सेवा पारायण, रमवणासुर हंता सुमित्रा नंदन लक्ष्मण जी का मैं भजन करता हूँ। ॥१०४ ॥

हृं हनुमांश्चतुर्थ्यन्तं हृदन्तो मन्त्रराजकः ।
रामचन्द्र ऋषिः प्रोक्तो योजयेत्पूर्ववत्क्रमात् ॥ १०५॥

द्विभुजं स्वर्णवर्णाभं रामसेवापरायणम् ।
मौञ्जीकौपीनसहितं मां ध्यायेद्रामसेवकम् ॥ इति॥ १०६॥

'हृं हनुमाते नमः' यह मंत्रराज हनुमान जी का है। रामचंद्र ऋषि हैं। शेष पूर्ववत है। द्विभुज स्वर्ण की कान्ति युक्त वर्ण वाले, राम सेवा परायण, जनेऊ और कौपीन धारी मैं हनुमान का ध्यान राम जी के सेवक के रूप में करता हूँ। ॥१०५-१०६॥

इति रामरहस्योपनिषदि द्वितीयोऽध्यायः ॥ २॥

रामरहस्योपनिषद् द्वितीय अध्याय पूर्ण हुआ।

॥ श्री हरि ॥

॥ श्रीरामरहस्योपनिषत् ॥

॥तृतीयो अध्याय : तीसरा अध्याय॥

सनकाद्या मुनयो हनूमन्तं पप्रच्छुः ।
आञ्जनेय महाबल पर्वोक्तमन्त्राणां पूजापीठमनुब्रूहीति ।
हनुमान् होवाच ।
आदौ षट्कोणम् । तन्मध्ये रामबीजं सश्रीकम् ।
तदधोभागे द्वितीयान्तं साध्यम् ।
बीजोर्ध्वभागे षष्ठ्यन्तं साधकम् । पार्श्वे दृष्टिबीजे तत्परितो
जीवप्राणशक्तिवश्यबीजानि । तत्सर्वं सन्मुखोन्मुखाभ्यां प्रणवाभ्यां
वेष्टनम् । अग्नीशासुरवायव्यपुरःपृष्ठेषु षट्कोणेषु दीर्घभाञ्जि ।
हृदयादिमन्त्राः क्रमेण ।
रां रीं रूं रैं रौं रः इति दीर्घभाजि तद्युक्तहृदयाद्यस्त्रान्तम् ।
षट्कोणपार्श्वे रमामायाबीजे । कोणाग्रे वाराहं हुमिति ।
तद्बीजान्तराले कामबीजम् । परितो वाग्भवम् ।

सनकादि ऋषियों ने हनुमान जी से पूछा- महाबली आञ्जनेय! पूर्वोक्त मन्त्रों का पूजापीठ कैसे होता है, यह बताइये। हनुमान जी बोले- पहले षट्कोण बनायें। उसके मध्य श्री रां' लिखें। इन बीज मन्त्रों के नीचे साध्य (कार्य जो अभीष्ट है) को द्वितीय विभक्ति में लिखें। बीजमन्त्र के ऊपर साधक (जापक) का नाम षष्ठी विभक्ति में लिखें।

बीज मंत्र के चारों ओर जीव-प्राण-शक्ति-वश्य बीज लिखें। ऊपर नीचे ॐ लिखें। हृदय न्यास से अस्त्र न्यास के ६ बीजों रां रौं हैं रः (सभी दीर्घ) को क्रम से लिखें। षट्कोण के पास श्रीं ह्रीं लिखेंकोंण के आगे हुम् यह वाराहबीज लिखें। उसके मध्य (कोण और हुं के मध्य) काम बीज क्लीं लिखें। उसके चारों ओर सरस्वतीबीज ऐं लिखे।

ततो वृत्तत्रयं साष्टपत्रम् । तेषु दलेषु स्वरानष्टवर्गान्प्रतिदलं मालामनुवर्णषट्कम् ।
अन्ते पञ्चाक्षरम् । तद्दलकपोलेष्वष्टवर्णान् । पुनरष्टदलपद्मम् । तेषु दलेषु नारायणाष्टाक्षरो मन्त्रः । तद्दलकपोलेषु श्रीबीजम् ।

फिर अष्टदलों का तीन वृत्ताकार यन्त्र बनायें। उनके दलों पर सभी स्वर, अष्टवर्ग (क च ट त प य श ह वर्ग) के सभी वर्णों को (यवर्ग – य र ल व, शवर्ग – श ष स) लिखें प्रत्येक दल पर मालाकार षडाक्षर तारक मंत्र लिखें (रां रामाय नाम)। अंत में पंचाक्षर मंत्र (रामाय नमः) लिखें फिर अगले अष्टदल कमल पर बाहर ॐ नमो नारायणाय, एवं ऊपर सर्वत्र श्री बीज लिखें।

ततो वृत्तम् । ततो द्वादशदलम् । तेषु दलेषु वासुदेवद्वादशाक्षरो मन्त्रः । तद्दलकपोलेष्वादिक्षान्तान् ।

फिर वृत्त के चारों ओर १२ दलों का कमल, उन पर ॐ नमो भगवते वासुदेवाय लिखें। फिर ऊपर अ से क्ष तक १२ वर्ण (अ इ उ क च र त प य श ह क्ष) लिखें।

ततो वृत्तम् । ततः षोडशदलम् । तेषु दलेषु हुं फट्
नतिसहितरामद्वादशाक्षरम् । तद्दलकपोलेषु मायाबीजम् ।
सर्वत्र प्रतिकपोलं द्विरावृत्त्या हं सं भ्रं ब्रं भ्रमं श्रुं
ञ्रम् ।

फिर वृत्त बनाकर चारों ओर १६ दल कमल बनायें सभी पत्तों पर ॐ नमो भगवते रामचन्द्राय नमः हुँ

फट इस १६ अक्षर वाले मंत्र के एक एक अक्षरों को क्रमशः लिखें। सभी के ऊपर माया बीज (ह्रीं) लिखें। दो आवृत्रि में क्रम से हं, सं, भ्रं, ब्रं, श्रुं, ञ्रम लिखे।(इस से सभी पत्ते पर एक एक अक्षर हो जाते हैं।)

ततो वृत्तम् । ततो द्वात्रिंशद्दलपद्मम् । तेषु दलेषु
नृसिंहमन्त्रराजानुष्टुभमन्त्रः । तद्दलकपोलेश्वष्टव-
स्त्रेकादशरुद्रद्वादशादित्यमन्त्राः प्रणवादिनमोन्ता-
श्चतुर्थ्यन्ताः क्रमेण । तद्बहिर्वषट्कारं परितः ।

फिर वृत्त बनाकर बत्तीस दलों का कमल बनायें। उस पर नृसिंह मन्त्र (श्री) उग्र बीरं आदि के ३२ वर्गों को एक एक कर सभी दलों पर लिखें। ऊपर अष्ट वसु, एकादश रुद्र, द्वादश आदित्य में प्रत्येक मन्त्र ॐ लगा कर (ॐ पहले, नमः बाद में और बीच में देवता का नाम) देव का चतुर्थी विभक्ति युक्त नाम लिखें। फिर यन्त्र से बाहर चारों ओर 'वषट्' लिखें।

ततो रेखात्रययुक्तं भूपुरम् । द्वादशदिक्षु राश्यादिभूषितम् ।
अष्टनागैरधिष्ठितम् । चतुर्दिक्षु नारसिंहबीजम् ।
विदिक्षु वाराहबीजम् । एतत्सर्वात्मकं यन्त्रं सर्वकामप्रदं
मोक्षप्रदं च ।

तीन रेखा वाला भूपुर (यंत्र) बनाएं। बारह राशि, अष्ट नाग, चारों और नृसिंह बीज (क्षरौं, क्षऔं) लिखें। कोनों पर वाराहबीज (ह) लिखें। यह मन्त्र सभी कामनाओं को देने वाला तथा मोक्षप्रद है।

एकाक्षरादिनवाक्षरान्तानामेतद्यन्त्रं
भवति । तद्दशावरणात्मकं भवति । षट्कोणमध्ये
साङ्गं राघवं यजेत् । षट्कोणेष्वङ्गैः
प्रथमा वृतिः । अष्टदलमूले आत्माद्यावरणम् ।
तदग्रे वासुदेवाद्यावरणम् । द्वितीयाष्टदलमूले
घृष्टाद्यावरणम् । तदग्रे हनूमदाद्यावरणम् ।
द्वादशदलेषु वसिष्ठाद्यावरणम् । षोडशदलेशु
नीलाद्यावरणम् । द्वात्रिंशद्दलेषु ध्रुवाद्यावरणम् ।

भूपुरान्तरिन्द्राद्यावरणम् । तद्बहिर्वज्राद्यावरणम् ।
एवमभ्यर्च्य मनुं जपेत् ॥

एकाक्षर 'रा' से नवाक्षर मन्त्र तक यन्त्र हो सकते हैं। मन्त्र के अनुसार आवरण पूजा होती है। षट्कोण के मध्य अङ्ग देवों सहित राघव भगवान की पूजा करें। यह प्रथमावरण है अष्टदल के मूल में आत्मा आदि आवरण है। फिर वासुदेव आदि आवरण है। दूसरे अष्टदल के मूल में घृष्टि आदि आवरण, आगे हनुमान आदि आवरण, १२ पत्रों पर वसिष्ठ आदि आवरण, षोडश दल पर नील आदि आवरण, ३२ दलों पर ध्रुव आदि आवरण, भूपुर के मध्य इन्द्र आदि आवरण, उससे बाहर ब्रज आदि आयुध आवरण, यह आवरण पूजा है। आवरण पूजा करने के बाद मंत्र का जाप करना चाहिए। एकाक्षर से नवाक्षर मंत्रों की यह विधि है।

अथ दशाक्षरादिद्वात्रिंशदक्षरान्तानां मन्त्राणां
पूजापीठमुच्यते । आदौ षट्कोणम् । तन्मध्ये स्वबीजम् ।
तन्मध्ये साध्यनामानि । एवं कामबीजवेष्टनम् । तं
शिष्टेन नवार्णेन वेष्टनम् । षट्कोणेषु
षडङ्गान्यग्नीशासुरवायव्यपूर्वपृष्ठेषु ।
तत्कपोलेषु श्रीमाये । कोणाग्रे क्रोधम् ।

अब दशाक्षर से ३२ अक्षरों के मन्त्रों का पूजापीठ बताते हैं। पहले षट्कोण, फिर मन्त्र का बीज, मध्य में साध्य (इच्छित वस्तु) का नाम, उसके चारों ओर कामबीज (क्ली), फिर नौ अक्षरों के शेष मन्त्र के

अक्षर चारों ओर, फिर ६ कोने पर न्यास के ६ अक्षर एक एक कर अग्निकोण, उत्तर, दक्षिण, वायव्य और पूर्व की ओर लिखें। ऊपर श्रीं ह्रीं, फिर क्रोध बीज (क्र) को कोने पर से आगे लिखें।

ततो वृत्तम् ।
ततोऽष्टदलम् । तेषु दलेषु षट्संख्यया
मालामनुवर्णान् । तद्दलकपोलेषु षोडश स्वराः ।
ततो वृत्तम् । तत्परित आदिक्षान्तम् । तद्बहिर्भूपुरम्
साष्टशूलाग्रम् । दिक्षु विदिक्षु नारसिंहवाराहे ।
एतन्महायन्त्रम् ।

फिर वृत्त बनायें। तब अष्टदल बनायें। पत्ते पर क्रम से ६ की संख्या में मन्त्र के अक्षर (एक पर ६. अक्षर), दल के ऊपर १६ स्वर (स्वरा: षोडश विख्याताः शारदतिलक इसके अनुसार अ इ उ ए ओ, आ ई ऊ ऋ, ॠ, लु, लू, अनुस्वर विसर्ग : आदि १६ स्वर हैं) लिखना चाहिए। फिर वृत्त के चारों ओर अ से क्ष तक वर्ण लिखें। बाहर भूपुर के घेरा में आठ मूर्ति सहित शिव, दिशाओं में तथा कोनों पर क्षौ हूं लिखने पर महायन्त्र बन जाता है।

आधारशक्त्यादिवैष्णवपीठम् ।
अङ्गैः प्रथमा वृतिः । मध्ये रामम् । वामभागे
सीताम् । तत्पुरतः शार्ङ्गं शरं च । अष्टदलमूले
हनुमदादिद्वितीयावरणम् । घृष्ट्यादितृतीयावरणम् ।
इन्द्रादिभिश्चतुर्थी । वज्रादिभिः पञ्चमी । एतद्यन्त्राराधन-

पूर्वकं दशाक्षरादिमन्त्रं जपेत् । ॥

आधार शक्ति, वैष्णव पीठ की देवियां अङ्गों सहित प्रथम आवरण में, मध्य में राम, बायें सीता, सामने शाई धनुष और बाण होते हैं। द्वितीयावरण में हनुमान् आदि, तृतीयावरण में घृष्टि आदि, चतुर्थ में इन्द्र आदि दिक्पाल, पांचवें में वज्र आदि आयुध की पूजा करने पर यन्त्र पीठ पूजा सम्पन्न होती है। फिर दक्षाक्षर से बत्तीस अक्षरों के मन्त्रों में से अभीष्ट मन्त्र का जप किया जाना चाहिए।

इति रामरहस्योपनिषदि तृतीयोऽध्यायः ॥ ३॥

रामरहस्योपनिषद् तृतीयाध्याय पूर्ण हुआ।

॥ श्री हरि ॥

॥ श्रीरामरहस्योपनिषत् ॥

॥ चतुर्थो ध्याय: चौथा अध्याय ॥

सनकाद्या मुनयो हनूमन्तं पप्रच्छुः ।
श्रीराममन्त्राणां पुरश्चरणविधिमनुब्रूहीति ।
हनूमान्होवाच ।
नित्यं त्रिषवणस्नायी पयोमूलफलादिभुक् ।
अथवा पायसाहारो हविष्यान्नाद एव वा ॥ १॥

सनकादि ऋषियों ने हुनमान जी से पूछा- आप श्रीराम मन्त्रों के पुरश्चरण का विधान बताइये। हनुमान् जी ने बताया- नित्य त्रिकाल स्नान करे। दूध फल मूल आदि भोजन करो। केवल दूध ही पिये। अथवा यज्ञ के अन्नों का ही भोजन करे। ॥ १॥

षड्सैश्च परित्यक्तः स्वाश्रमोक्तविधिं चरन् ।
वनितादिषु वाक्कर्ममनोभिर्निःस्पृहः शुचिः ॥ २॥

भूमिशायी ब्रह्मचारी निष्कामो गुरुभक्तिमान् ।
स्नानपूजाजपध्यानहोमतर्पणतत्परः ॥ ३॥

ब्रह्मचर्य आदि जिस आश्रम में ही उस की विधि का निर्वाह करते हुये भोजन के ६ रसों का त्याग कर दे। वाणी कर्म मन्त्र से स्त्री संसर्ग से

दूर रहकर पवित्र रहे। गुरु में आस्था कर, पृथ्वी पर सोने वाला, कामना रहित, ब्रह्मचारी होकर स्नान पूजा जप, ध्यान, होम, तप्रण में तत्पर रहे। ॥२-३॥

गुरूपदिष्टमार्गेण ध्यायन्राममनन्यधीः ।
सूर्येन्दुगुरुदीपादिगोब्राह्मणसमीपतः ॥ ४॥

श्रीरामसन्निधौ मौनी मन्त्रार्थमनुचिन्तयन् ।
व्याघ्रचर्मासने स्थित्वा स्वस्तिकाद्यासनक्रमात् ॥ ५॥

गुरु की शिक्षा के अनुसार अन्यत्र से मन हटाकर, श्री राम जी का ध्यान करे। सूर्य -चंद्र अर्थात दिन रात, गुरु दीपक, गौ ब्राह्मण के समीप ही रहे। सहरे राम के सम्मुख मंत्र के अर्थ का चिंतन करते हुए मौन ही रहे। व्याघ्र चरम के आसान पर स्वस्तिक आदि आसन मुद्रा से बैठ जाए ॥४ -५ ॥

तुलसीपारिजातश्रीवृक्षमूलादिकस्थले ।
पद्माक्षतुलसीकाष्ठरुद्राक्षकृतमालया ॥ ६॥

मातृकामालया मन्त्री मनसैव मनुं जपेत् ।
अभ्यर्च्य वैष्णवे पीठे जपेदक्षरलक्षकम् ॥ ७॥

तुलसी–पारिजात–बेल नृक्ष के नीचे या समीप बैठाकर साधक कमलाक्ष, तुलसी या रुद्राक्ष माला से भातृका अक्षित मंत्र जप करना

चाहिए। मानसिक जप श्रेष्ठ है। मंत्र के जितने आकार हों उतने लाख जप करने पर पुरश्चरण होता है। ॥६-७॥

तर्पयेत्तद्दशांशेन पायसात्तद्दशांशतः ।
जुहुयाद्घृतेनैव भोजयेत्तद्दशांशतः ॥ ८॥

जप के बाद मंत्र संख्या का दशांश, हवन, पायस या गोधृत से करना चाहिए। हवन का दशांश तप्रण उसका दशांश, मार्जन उसका दशांश, ब्राह्मण भोजन कराना चाहिए । ॥८॥

ततः पुष्पाञ्जलिं मूलमन्त्रेण विधिवच्चरेत् ।
ततः सिद्धमनुर्भूत्वा जीवन्मुक्तो भवेन्मुनिः ॥ ९॥

फिर मूल मंत्र से विधिवत पुष्पांजलि देना चाहिए। इस प्रकार मंत्र सिद्ध हो जाता है और जापक जीवनमुक्त हो जाता है। ॥ ९॥

अणिमादिर्भजत्येनं यूनं वरवधूरिव ।
ऐहिकेषु च कार्येषु महापत्सु च सर्वदा ॥ १०॥

नैव योज्यो राममन्त्रः केवलं मोक्षसाधकः ।
ऐहिके समनुप्राप्ते मां स्मरेद्रामसेवकम् ॥ ११॥

युवा को जैसे उत्तम वधू चाहती है उसी प्रकार अणिमा आदि सिद्धियां साधक को प्राप्त हो जाती है। किन्तु सांसारिक कार्यों की सिद्धि के लिए या आपत्ति निवारण के लिए राम मन्त्र का प्रयोग करना उचित नहीं है, मोक्ष साधना के लिए है इसका अनुष्ठान करना चाहिए। यदि सांसारिक कार्य सिद्ध करना हो तब तो राम के सेवक मुख हनुमान का स्मरण करना चाहिए।॥१०-११॥

यो रामं संस्मरेन्नित्यं भक्त्या मनुपरायणः ।
तस्याहमिष्टसंसिद्ध्यै दीक्षितोऽस्मि मुनीश्वराः ॥ १२॥

मुनीश्वरों! जो नित्य राम का स्मरण करता है, भक्तिभाव से मन्त्र जप करता है उसकी अभीष्ट सिद्धि के लिए मैं सद्य तत्पर रहता हूँ। ॥१२॥

वाञ्छितार्थं प्रदास्यामि भक्तानां राघवस्य तु ।
सर्वथा जागरूकोऽस्मि रामकार्यधुरन्धरः ॥ १३॥

राघव के भक्तों को मैं अभीष्ट वर प्रदान करता रहूंगा। क्योंकि रामकार्य करने के लिए मैं सदा सावधान रहता हूँ।१३।।

इति रामरहस्योपनिषदि चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४॥

रामरहस्योपनिषद् चतुर्थाध्याय पूर्ण हुआ।

॥ श्री हरि ॥

॥ श्रीरामरहस्योपनिषत् ॥

॥ पंचमोऽध्यायः पाँचवाँ अध्याय ॥

सनकाद्या मुनयो हनूमन्तं पप्रच्छुः ।
श्रीराममन्त्रार्थमनुब्रूहीति । हनूमान्होवाच ।
सर्वेषु राममन्त्रेषु मन्त्रराजः षडक्षरः ।
एकधाय द्विधा त्रेधा चतुर्धा पञ्चधा तथा ॥ १॥

षट्सप्तधाष्टधा चैव बहुधायं व्यवस्थितः ।
षडक्षरस्य माहात्म्यं शिवो जानाति तत्त्वतः ॥ २॥

सनकादि ऋषियों ने फिर हनुमान जी से पूछा – आप श्री राम मंत्रों का अर्थ बताइए। हनुमान जी ने कहा श्री राम का छह अक्षरों का षडक्षर मंत्र सर्वश्रेष्ठ है। यह आठ प्रकार का तथा और भी अनेक प्रकार का है। इस मंत्र का महत्व शिव जी यथार्थ रूप से जानते हैं। ॥१-२॥

श्रीराममन्त्रराजस्य सम्यगर्थोऽयमुच्यते ।
नारायणाष्टाक्षरे च शिवपञ्चाक्षरे तथा ।
सार्थकार्णद्वयं रामो रमन्ते यत्र योगिनः ।
रकारो वह्निवचनः प्रकाशः पर्यवस्यति ॥ ३॥

श्री राम मंत्र राज का वास्तविक अर्थ कहता हूँ। नारायण के अष्टाक्षर मंत्र (ॐ नमो नारायणाय) तथा शिव के पंचाक्षर मंत्र (नमः शिवाय) में र और म दो अक्षर सार्थक हैं। राम वह हैं जिनमें योगी जन सद्य निमग्न रहते हैं। रमण करते हैं। र अग्निबीज है यह प्रकाश अर्थ को बताता है। ॥ ३॥

सच्चिदानन्दरूपोऽस्य परमात्मार्थ उच्यते ।
व्यञ्जनं निष्कलं ब्रह्म प्राणो मायेति च स्वरः ॥ ४॥

सत्य, चेतन, आनंद, सच्चिदानंद परमात्मा इस र का अर्थ है। र व्यंजन है। निरंजन ब्रह्म है। 'आ' यह स्वर ही प्राणतत्व माया है। ॥ ४ ॥

व्यञ्जनैः स्वरसंयोगं विद्धि तत्प्राणयोजनम् ।
रेफो ज्योतिर्मये तस्मात्कृतमाकरयोजनम् ॥ ५॥

व्यंजन (र) में स्वर (आ) का संयोग होना ही प्राण तत्व है। ज्योतिर्मय 'र' या 'रेफ' में 'आ' का संयोजन इसी से हुआ है। ॥ ५ ॥

मकारोऽभ्युदयार्थत्वात्स मायेति च कीर्त्यते ।
सोऽयं बीजं स्वकं यस्मात्समायं ब्रह्म चोच्यते ॥ ६॥

म का अर्थ है उन्नति। इसी से 'म' को माया कहा गया है। रां यह बीज राम मंत्र है। 'रां' से बिन्दु माया सहित पुरुष बढ़म का अर्थ लिया गया है। ॥६॥

सबिन्दुः सोऽपि पुरुषः शिवसूर्येन्दुरूपवान् ।
ज्योतिस्तस्य शिखा रूपं नादः सप्रकृतिर्मतः ॥ ७॥

यह पुरुष शिव सूर्य चंद्र रूप वाला है। 'रा' तो ज्योति कि ज्वाला है बिन्दु नाद तत्व है यह प्रकृति (माया) है। ॥ ७॥

प्रकृतिः पुरुषश्चोभौ समायाद्ब्रह्मणः स्मृतौ ।
बिन्दुनादात्मकं बीजं वह्निसोमकलात्मकम् ॥ ८॥

'आम' से परीकृत तथा पुरुष दोनों ग्रहण किए जाते हैं। इस प्रकार बिन्दु और नपद से युक्त बीज 'रां' है। यह अग्नि और चंद्र की कला रूप है। ॥८॥

अग्नीषोमात्मकं रूपं रामबीजे प्रतिष्ठितम् ।
यथैव वटबीजस्थः प्राकृतश्च महाद्रुमः ॥ ९॥

अग्नि और सोम का सम्मिलित रूप 'रां' इस मंत्र बीज में प्रतिष्ठित उसी प्रकार से है जैसे वट के बीज में ही महान वटवृक्ष प्रतिष्ठित है। ॥ ९॥

तथैव रामबीजस्थं जगदेतच्चराचरम् ।
बीजोक्तमुभयार्थत्वं रामनामनि दृश्यते ॥ १०॥

'रां' बीज में ही चर और अचर जगत स्थित है। बीच में तो सगुण निर्गुण या अग्नि और चंद्र तत्व है, वही 'राम' इस नाम में भी है। ॥१०॥

बीजं मायाविनिर्मुक्तं परं ब्रह्मेति कीर्त्यते ।
मुक्तिदं साधकानां च मकारो मुक्तिदो मतः ॥ ११॥
'

रां' अक्षर माया रहित परब्रह्म को बताता है, म अक्षर मुक्ति अर्थ वाचक है। मकार सादक को मुक्ति प्रदाता है ॥ ११॥

मारूपत्वादतो रामो भुक्तिमुक्तिफलप्रदः ।
आद्यो र तत्पदार्थः स्यान्मकरस्त्वंपदार्थवान् ॥ १२॥

मा (लक्ष्मी) रूप ही 'म' है, अत: यह मुक्ति दाता है। इस प्रकार जो भोग और मोक्षदाता है वही परमात्मा राम है। ॥ १२॥

तयोः संयोजनमसीत्यर्थे तत्त्वविदो विदुः ।
नमस्त्वमर्थो विज्ञेयो रामस्तत्पदमुच्यते ॥ १३॥

असीत्यर्थे चतुर्थी स्यादेवं मन्त्रेषु योजयेत् ।
तत्त्वमस्यादिवाक्यं तु केवलं मुक्तिदं यतः ॥ १४॥

राम का पहला अक्षर 'रा' है तत पद का अर्थ परमात्मा है और 'म' अक्षर ही 'त्वं' पद का अर्थ (जीव) है। दोनों तत-त्वं पदों का मेल असि (हो) इस क्रिया पद से है। इसी प्रकार षडाक्षर मंत्र का 'नमः' शब्द त्वम (जीव) अर्थ को कहता है। 'राम' शब्द तत (परब्रह्म) अर्थ को बताता है। राम के आगे वाली चतुर्थी विभक्ति (आए) है। 'असि' (हौ) अर्थ का बताती है। 'तत्वमसि' यह वेदवाक्य मुक्तिदायक है। उसी प्रकार यह षडाक्षर मंत्र 'रां रामाय नमः' भी तत्वमसि का अर्थ है और मुक्तिदायक है। ॥१३-१४॥

भुक्तिमुक्तिप्रदं चैतत्तस्मादप्यतिरिच्यते ।
मनुष्वेतेषु सर्वेषामधिकारोऽस्ति देहिनाम् ॥ १५॥

भोग और मोक्ष देने वाला यह मंत्र 'तत्व मसि' इस महावाक्य से भी अधिक महत्व का है, इसमें सारे मनुष्यों का अधिकार हैं (सर्वेप्रपत्तेरधिकारिणी मंत्रः) । ॥ १५॥

मुमुक्षूणां विरक्तानां तथा चाश्रमवासिनाम् ।
प्रणवत्वात्सदा ध्येयो यतीनां च विशेषतः ।
राममन्त्रार्थविज्ञानी जीवन्मुक्तो न संशयः ॥ १६॥

प्रणव (ॐ) रूप ही यह षडाक्षर मंत्र है। अत: मोक्ष की इच्छा वाले विरक्त महात्मा तथा किसी भी आश्रम के जनों के लिए विशेष रूप से सन्यासी के लिए सदा ध्यान और जप के योग्य है। राम मंत्रों का पुनश्चरण करने वाला श्री राम चंद्र प्रभु द्वारा सायुज्य मोक्ष को प्रपात करता है। ॥ १६॥

य इमामुपनिषदमधीते सोऽग्निपूतो भवति ।
स वायुपूतो भवति । सुरापानात्पूतो भवति ।
स्वर्णस्तेयात्पूतो भवति । ब्रह्महत्यापूतो भवति ।
स राममन्त्राणां कृतपुरश्चरणो रामचन्द्रो भवति ।
तदेतदृचाभ्युक्तम् ।
सदा रामोऽहमस्मीति तत्त्वतः प्रवदन्ति ये ।
न ते संसारिणो नूनं राम एव न संशयः ॥ ॐ सत्यमित्युपनिषत् ॥

जो इस (आथर्वण) उपनिषद का अध्यानन करता है वह अग्नि तथा वायु से होने वाली पवित्रता धारण करता है। सुरापान, स्वर्ण की चोरी, ब्रह्म हत्या और महापापों से भी रहित होकर पवित्र हो जाता है। जैसा कि इस ऋचा में कहा है, सदा मैं राम परब्रह्म हूँ, यह जो तत्व ज्ञान करके कहते है, वह कभी संसार में नहीं लौटते हैं। वह राम रूप ही हैं। इसमे संशय नहीं है। ॐ सत्यम (राम जी परब्रह्म है, यह सत्य है)। यह उपनिषद पूर्ण हुआ। ॥१७॥

॥ हरिः ॐ ॥

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः ॥

गुरु के यहाँ अध्ययन करने वाले शिष्य अपने गुरु, सहपाठी तथा मानवमात्र का कल्याण-चिन्तन करते हुए देवताओं से प्रार्थना करते है कि:

हे देवगण ! हम भगवान का आराधन करते हुए कानों से कल्याणमय वचन सुनें। नेत्रों से कल्याण ही देखें। सुदृढः अंगों एवं शरीर से भगवान की स्तुति करते हुए हमलोग; जो आयु आराध्य देव परमात्मा के काम आ सके, उसका उपभोग करें।

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥

जिनका सुयश सभी ओर फैला हुआ है, वह इन्द्रदेव हमारे लिए कल्याण की पुष्टि करें, सम्पूर्ण विश्व का ज्ञान रखने वाले पूषा हमारे लिए कल्याण की पुष्टि करें, हमारे जीवन से अरिष्टों को मिटाने के लिए चक्र सदृश्य, शक्तिशाली गरुड़देव हमारे लिए कल्याण की पुष्टि

करें तथा बुद्धि के स्वामी बृहस्पति भी हमारे लिए कल्याण की पुष्टि करें।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

हमारे, अधिभौतिक, अधिदैविक तथा तथा आध्यात्मिक तापों (दुखों) की शांति हो।

ॐ तत् सत् ॥

॥ इति श्रीरामरहस्योपनिषत्समाप्ता ॥

॥ श्री रामरहस्योपनिषद पूर्ण हुआ ॥

श्री राम, सीताजी, लक्ष्मण जी और भरत जी मंत्र

अध्याय २ में बताए गए विभिन्न मंत्र

श्लोक	संख्या	मंत्र
श्री राम		
१	एक अक्षर मंत्र	**रां**
७	दो अक्षर मंत्र	**राम**
८	तीन अक्षर मंत्र	**ॐ राम** **ह्रीं राम** **श्री राम** **क्लीं राम** **ऐं राम** **राम राम**
९	चार अक्षर मंत्र	**राम चंद्र** **राम भद्र**
१०.	पाँच अक्षर मंत्र	**रामाय नमः**
१६-१७	छह अक्षर मंत्र (षडाक्षर मंत्र)	**ॐ रामाय नमः** **ह्रीं रामाय नमः**

		श्री रामाय नमः **क्लीं रामाय नमः** **ऐं रामाय नमः** **राम रामाय नमः**
१८	छह अक्षर मंत्र (षडाक्षर मंत्र)	**श्री राम भद्र श्री** **ह्रीं राम भद्र ह्रीं** **क्लीं राम भद्र क्लीं** **श्री राम चंद्र श्री** **ह्रीं राम चंद्र ह्रीं** **क्लीं राम चंद्र क्लीं**
१९	छह अक्षर मंत्र (षडाक्षर मंत्र)	**ॐ रामाय नमः** **ॐ रामाय स्वाहा** **ॐ रामाय हुं फट**
२५	सात अक्षर मंत्र	**राम चंद्राय नमः** **राम भद्राय नमः**
२६	आठ अक्षर मंत्र	**ॐ राम चंद्राय नमः** **ॐ राम भद्राय नमः** **ॐ रामाय हुं फट स्वाहा**

३५	आठ अक्षर मंत्र	**श्री रामः शरणं मम**
३९		**ॐ रामः शरणं मम** **राम रामः शरणं मम** **क्लीं रामः शरणं मम** **ह्रीं रामः शरणं मम** **ऐं रामः शरणं मम** **श्रीं रामः शरणं मम**
३०	नवाक्षर मंत्र	**ग्लौं ॐ ह्रीं नमः रामाय ग्लौं**
३९	नवाक्षर मंत्र	**ॐ रामाय शरणं मम ॐ**
४०	दस अक्षर मंत्र	**जानकी वल्लभाय स्वाहा हूं**
४२	दस अक्षर मंत्र	**क्लीं जानकी वल्लभाय स्वाहा**
४८-४९	दस अक्षर मंत्र	**रामाय धनुषपाणये स्वाहा**
५०	ग्यारह अक्षर मंत्र	**ॐ रामाय धनुषपाणये स्वाहा** **ह्रीं रामाय धनुषपाणये स्वाहा** **श्रीं रामाय धनुषपाणये स्वाहा** **क्लीं रामाय धनुषपाणये स्वाहा** **ऐं रामाय धनुषपाणये स्वाहा** **राम रामाय धनुषपाणये स्वाहा**

५१-५३	बारह अक्षर मंत्र	**ॐ ह्रीं भरताग्रज राम क्लीं स्वाहा** **ॐ ह्रीं रामाय धनुषपाणये स्वाहा**
५४-५५	बारह अक्षर मंत्र	**ॐ नमो भगवते राम चंद्राय** **ॐ नमो भगवते राम भद्राय**
५६	तेरह अक्षर मंत्र	**श्री राम जय राम जय जय राम**
५८	चौदह अक्षर मंत्र	**ॐ श्री राम जय राम जय जय राम**
५८	पंद्रह अक्षर मंत्र	**श्री राम जय राम जय जय राम राम**
५९	सोलह अक्षर मंत्र	**नमः सीतापत्यै रामे हं हं हुं फट**
६२	सत्रह अक्षर मंत्र	**ॐ नमः सीतापत्यै रामे हं हं हुं फट**
६२-६३	अट्ठारह अक्षर मंत्र	**ॐ नमो भगवते रामाय महापुरुषाय नमः**

६४	उन्नीस अक्षर मंत्र	**क्लीं ॐ नमो भगवते रामाय महापुरुषाय नमः**
६४-६५	बीस अक्षर मंत्र	**ॐ नमो भगवते रामाय सर्व सौभाग्यं देहि में स्वाहा**
६६	इक्कीस अक्षर मंत्र	**ॐ नमो भगवते रामाय सकलापन्निवारणाय स्वाहा**
६७-68	बाईस अक्षर मंत्र	**'ॐ श्रीं रां दाशरथाय सीतावल्लभाय सर्वाभीष्टदाय नमः**
६९	तेईस अक्षर मंत्र	**ॐ नमो भगवते वीरंरामाय सकलशत्रून् हन हन स्वाहा**
७३-७४	चौबीस अक्षर मंत्र	**ॐ नमो भगवते श्री रामाय तारकब्रह्मणे मां तारय नमः ॐ**
७५-७६	पच्चीस अक्षर मंत्र	**क्लीं ॐ नमो भगवते रामचन्द्रय सकलजनवश्यकराय स्वाहा**
७७	छब्बीस अक्षर मंत्र	**ॐ क्लीं नमो भगवते रामचन्द्रय**

		सकलजनवश्यकराय स्वाहा ॐ
७७	सत्ताईस अक्षर मंत्र	**ॐ क्लीं ॐ नमो भगवते रामचन्द्रय सकलजनवश्यकराय स्वाहा ॐ**
७८-७९	अठाईस अक्षर मंत्र	**ॐ नमो भगवते रक्षोघ्नविशदाय सर्वविघ्नान्त्समुच्चार्य निवारय स्वाहा**
७८-७९	उन्नतीस अक्षर मंत्र	**ॐ नमो भगवते रक्षोघ्नविशदाय सर्वविघ्नान्त्समुच्चार्य निवारय स्वाहा ॐ**
८०	तीस अक्षर मंत्र	**राम ॐ नमो भगवते रक्षोघ्नविशदाय सर्वविघ्नान्त्समुच्चार्य निवारय स्वाहा ॐ**
८०	इकतीस अक्षर मंत्र	**राम ॐ नमो भगवते रक्षोघ्नविशदाय सर्वविघ्नान्त्समुच्चार्य निवारय स्वाहा ॐ राम**

८१-८२	बतीस अक्षर मंत्र	**रामभद्र महेश्वास रघुवीर नृपोत्तम भो दशास्यान्तकास्माकं श्रियं दापय देहि में**
८६-८७	श्री राम गायत्री मंत्र	**ॐ दशरथाय विद्महे सीता वल्लभाय धीमहि तन्नो रामः प्रचोदयात्**
८८	सम्मोहन मंत्र	**ह्रीं क्लीं ॐ दशरथाय विद्महे सीता वल्लभाय धीमहि तन्नो श्री रामः प्रचोदयात्**
९०-९२	सैंतालीस अक्षर मंत्र	**ॐ नमो भगवते रघुनन्दनाय रक्षोघ्नविशदाय मधुराय प्रसन्नवदनाय अमिततेजसे बलरामाय विष्णवे नमः**
श्री सीता जी		
९४	छह अक्षर मंत्र	**श्री सीतायै स्वाहा**
९५-९६	छह अक्षर मंत्र	**श्री सीतायै नमः**

लक्ष्मण जी		
९८-९९		लं लक्ष्मणाय नमः
भरत जी		
१००		भं भरताए नमः

संकलनकर्ता:

श्री मनीष त्यागी

संस्थापक एवं अध्यक्ष
श्री हिंदू धर्म वैदिक एजुकेशन फाउंडेशन

www.shdvef.com

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय: ॥